मनोधर्म में आसक्त मनुष्यों के संग का भी त्याग करना होगा। इन अनर्थकारी संगों और विषयवासना के दोष से मुक्त होकर अनुकूलतापूर्वक श्रीकृष्ण के सेवन को शुद्धभक्ति कहा जाता है। **आनुकूल्यस्य संकल्पः प्रातिकूल्यस्य वर्जनम्।** श्रीकृष्ण का स्मरण और कृष्णकर्म अनुकूलभाव से करे, प्रतिकूलतापूर्वक नहीं। कंस श्रीकृष्ण का वैरी था। अतः उनके जन्म से ही वह उन्हें मारने के लिये योजनायें बनाने लगा। परन्तु ऐसा करने में सदा असफल रहने के कारण उसे नित्य श्रीकृष्ण का स्मरण बना रहता। अतएव कार्य करते, खाते, यहाँ तक कि सोते हुए भी वह सब प्रकार से कृष्णभावनाभावित रहता। परन्तु उसकी कृष्णभावना अनुकूल नहीं थी; इस कारण नित्य चौबीस घण्टे श्रीकृष्ण के चिन्तन में निमग्न रहने पर भी उसे असुर ही माना गया और अन्त में श्रीकृष्ण ने उसका वध किया। यह अवश्य सत्य है कि श्रीकृष्ण जिसका वध करते हैं, वह तत्क्षण मुक्त हो जाता है। किन्तु शुद्धभक्त का लक्ष्य यह नहीं है। शुद्धभक्त को तो मुक्ति की भी स्पृहा नहीं रहती। परमधाम गोलोक वृन्दावन में प्रवेश करने के लिए भी वह आतुर नहीं होता। वह जहाँ कहीं भी रहे, उसका एकमात्र लक्ष्य श्रीकृष्ण की सेवा के परायण रहना है।

कृष्णभक्त प्राणीमात्र में मित्रभाव रखता है। इसीलिए यहाँ कहा है कि उसका कोई शत्रु नहीं होता। यह कैसे हो सकता है? कृष्णभावनाभावित भक्त जानता है कि एकमात्र कृष्णभक्ति ही जीव को जीवन के सब दुःखों से मुक्त कर सकती है। उसे इसका निजी अनुभव है, इसलिए वह मानवसमाज में कृष्णभावना-पद्धति का प्रवर्तन करना चाहता है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं, जब भक्तों ने भगवद्भावना के प्रसार के लिये अपने प्राणों तक का उत्सर्ग कर दिया। इस सन्दर्भ में श्रीईसामसीह का दृष्टान्त प्रसिद्ध है। उन्होंने भगवद्भाव के प्रचार में अभक्तों द्वारा सूली पर चढाये जाने पर प्राणों की आहुति दी थी। अवश्य ही, ऐसा नहीं कि इस कारण उनकी मृत्यु हो गई। इसी प्रकार, भारत में हरिदास ठाकुर आदि भक्तों के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। भक्त अपने प्राणों को संकट में डालते हैं क्योंकि उनका उद्देश्य है कि कृष्णभावना का प्रसार-प्रचार हो और यह कार्य सुगम नहीं है। कृष्णभावनाभावित पुरुष जानता है कि मनुष्य के दुःख का कारण श्रीकृष्ण से अपने नित्य सम्बन्ध को भूल बैठना है। अतएव किसी को भवरोग से मुक्त कर देना मानवसमाज का सबसे श्रेष्ठ उपकार-कार्य होगा। इस प्रकार शुद्धभक्त निरन्तर भगवत्-सेवा में तत्पर रहता है। इस सबसे हम सहज ही कल्पना कर सकते हैं कि श्रीकृष्ण उन भक्तों पर कितनी अतिशय कृपा का परिवर्षण करते होंगे, जो अपना सर्वस्व दाँव पर लगा कर उनकी सेवा के परायण हैं। यह निश्चित है कि ये भक्त देह-त्याग कर श्रीकृष्ण के परमधाम को अवश्य प्राप्त हो जायेंगे।

सारांश में कहा जा सकता है कि इस अध्याय में श्रीकृष्ण ने अपना अस्थायी विश्वरूप, सब का नाश करने वाला महाकालरूप और चतुर्भुज विष्णुरूप भी प्रकट किया है। इस प्रकार सिद्ध हुआ कि श्रीकृष्ण इन सब रूपों के उद्गम हैं। यह सत्य